प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का एक अध्ययन

*** डा. सतीश कुमार सिंह**

भारत के लिए अनविार्य निःशुल्क शिक्षा की संकल्पना बहुत पुरानी है सन् 1911 में इंण्डियन लेजिस्लेटिव कौंशिल में श्री बाल गोपाल कृभण गोखले द्वारा इसके बारे में एक विधेयक प्रस्तुत किया गया था। भारतीय संविधान के 45 अनुच्छेद में सन् 1960 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा की सुविधाएं देने की व्यवस्था करने की बात कही गयी थी। परन्तु आजादी के इतने वर्षो बाद भी तथाकथित सुनियोजित प्रयासों व वचन बद्धता पर बार–बार जोर देने के बावजूद लक्ष्य पूरा नहीं हो सका है। जिसके कारण अनेकों शिशु मन्दिर, नर्सरी विद्यालय भी प्रचुर मात्रा में बढ़ते जा रहें है। और परिषदीय विद्यालय उपेक्षित हो रहें है।

शोधकर्ता प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में बदलते हुए परिवेश के अनुरूप वास्तव में संसाधनों की कमी या युक्तिसंगत कार्यनीति की कमी, भौतिक चका–चौंध और सरकार का खोखला प्रयास तथा निःशुल्क अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, निःशुल्क पुस्तक वितरण, पोषाहार योजना, आपरेशन ब्लैक बोर्ड, साक्षरता अभियान इत्यादि के देखते हुए अपनी जिज्ञासा जाहिर किया कि आज प्राथमिक स्तर की शिक्षा क्यों अपने उद्धेश्य तक नहीं पहुँच पा रही है? क्या अध्यापक की गुणवत्ता में कमी आ रही है? जबकि ये सुविधाएं नर्सरी एवं सरस्वती शिशु मन्दिरों में नहीं है। किन्तु संख्या बल अधिक है। इस लिए भारतीय शिक्षा सर्वेक्षण (1968), शिक्षा की चुनौती का दस्तावेज (1985), नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), शिक्षकों की नियुक्ति हेतु विशिष्ट बी.टी.सी. तथा समाज के बदलते मानक को आधार मानते हुए प्रस्तुत अध्ययन का निर्णय लिया, और यह जानने का प्रयास किया गया कि परिषदीय, नर्सरी एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में अन्तर है? इसलिए प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित शि र्षक प्रदान किया गया है–

"प्राथमिक स्तर के अध्यापको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का एक अध्ययन"

उद्देश्य–

1. प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा नर्सरी अध्यापकों का शिक्षण के प्रति अभिव त्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा सरस्वती शिशु मन्दिर अध्यापकों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्राथमिक स्तर पर नर्सरी तथा सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं–प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नालिखित हैं–

- प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा नर्सरी अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के बीच सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति के बीच सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्राथमिक स्तर पर नर्सरी तथा सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के बीच सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु याद च्छिक तकनीकी का प्रयोग किया गया है। जिसमें बलिया जनपद के शहरी तथा गमीण प्राथमिक विद्यालयों के परिषदीय, नर्सरी, सरस्वती शिशु मन्दिर के क्रमशः 150, 200 व 150 अध्यापकों को चयनित किया गया।

उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शिक्षक अभिवभत्ति को जानने के लिए डा. एस.पी. अहलूवालिया के टी.ए.आई. का प्रयोग किया गया।

आँकड़ो का विश्लेषण :–

आँकडों के विश्लेषण से निम्नालिखि परिणाम ज्ञात हुए–

सारणी –1

परिषदीय तथा नर्सरी अध्यापकों के शिक्षण अभिवृत्ति का तुलानात्मक अध्ययन

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	सी.आर. मूल्य
परिषदीय अध्यापक	150	245.21	17.13	1.90	2.14*
न. अध्यापक	200	241.14	18.25		

d-f. = (348) ***सार्थकता .05 स्तर पर ¼1-96½ से**

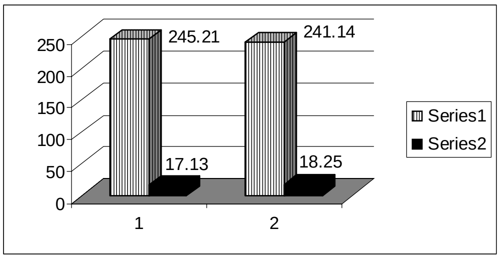

bl fo'yf"kr lkj.kh dk vkj[kh; fu:i.k fuEufyf[kr gA

1. माध्य, 2. मानक विचलन

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, केरियर कॉलेज, भेल, भोपाल (म.प्र.)

शिक्षक की अभिवृत्ति
• परिषदीय अध्यापक
•नर्सरी अध्यापक

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि परिषदीय अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के माध्यों का अंक 245.21 और मानक विचलन 17.13 प्राप्त हुआ था। जबकि नर्सरी अध्यापकों की शिक्षण अभिव त्ति के मध्यमान 241.14 तथा मानक विचलन 18.25 प्राप्त हुआ था। इनकी सहायता से मानक त्रटि 1.90 गण्ना की गयी। अंत में सी.आर.मल्य की गणना से 2.14 प्राप्त हुआ था। यह मान निर्धारित डी.एफ. (348) के सार्थकता स्थर .05 के 1.96 से अधिक है जिससे बनायी गयी शून्य परिकल्पना "प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा नर्सरी अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के बीच सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि परिषदीय अध्यापक नर्सरी अध्यापकों की तुलना में उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले होते हैं और कम विचलित भी होते हैं, कारण की परिषदीय अध्यापक अनुभवी तथा प्रशिक्षण प्राप्त होते है। जिनमें शिक्षण अभिवृत्ति होती है जबकि नर्सरी अध्यापकों में से अधिकांश केवल बेरोजगार होने के कारण खाली समय व्यतित के लिए लगे होते हैं।

सारणी – 2

परिषदीय तथा सरस्वती शिशु मन्दिर अध्यापकों के शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन ।

lEg	l[;k	ek/;	ekud fopyu	ekud =fV	lh-vkj- eY;
परिषदीय अध्यापक	150	245.21	17.13	1.93	7.18*
नर्सरी अध्यापक	200	231.34	16.42		

d.f. = (298) * lkFkdrk .05 Lrj ij ¼1-96½ l

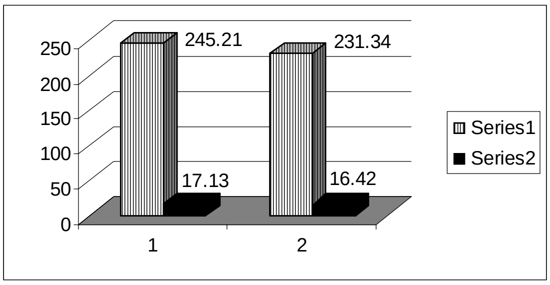

bl fo'yf"kr lkj.kh dk vkj[kh; fu:i.k fuEufyf[kr gA

1. माध्य 2.मानक विचलन

शिक्षक की अभिवृत्ति
सरस्वती शिशु मंदिर अध्यापक
परिषदीय अध्यापक

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि परिषदीय अध्यापकों की शिक्षण अभिव त्ति के माध्यों का अंक 245.21 और मानक विचलन 17.13 प्राप्त हुया था। जबकि सरस्वती शिशु मन्दिर अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति क मध्यमान 231.34 तथा मानक विचलन 16.42 प्राप्त हुआ था। इनकी सहायता से मानक त्रुटि 1.93 गणना की गयी। अंत में सी.आर.मल्य की गणना से 7.18 प्राप्त हुआ था। यह मान निर्धारित डी.एफ. (298) के सार्थकता स्तर .05 के 1.96 से अधिक है जिससे बनायी गयी शून्य परिकल्पना "प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा सरस्वती शिशु मन्दिर अध्यापाकों की शिक्षण अभिवृत्ति के बीच सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि परिषदीय अध्यापक सरस्वती शिशु मन्दिर अध्यापकों की तुलना में उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले होते हैं और अधिक विचलित भी होते हैं, कारण की परिषदीय अध्यापक अनुभवी तथा प्रशिक्षण प्राप्त होते है और सरकारी सेवा में होते हैं। जिससे इनमें शिक्षण अभिवृत्ति होती है जबकि सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापक अप्रशिक्षित तथा अधिकांश बेरोजगार होने के कारण खाली समय व्यतित करने के लिए लगे होतें हैं।

lkj.kh&3

lEg	l[;k	ek/;	ekud fopyu	ekud =fV	lh-vkj- eY;
नर्सरी अध्यापक	200	241.14	18.25	1.85	5.29*
सरस्वती शिशु मंदिर अध्यापक	150	231.34	16.42		

d-f. = (348) *सार्थकता .05 स्तर पर (1.96) से

bl fo'yf"kr lkj.kh dk vkj[kh; fu:i.k fuEufyf[kr gA

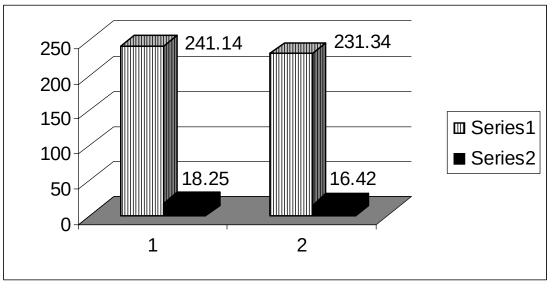

1. माध्य 2.मानक विचलन

• शिक्षक की अभिवृत्ति
• सरस्वती शिशु मंदिर के अध्यापक
• नर्सरी अध्यापक

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि नर्सरी अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के माध्यों का अंक 241.14 और मानक चिवलन 18.25 प्राप्त हुआ था। जबकि सरस्वती शिशु मन्दिर अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान 231.34 तथा मानक विचलन 16.42 प्राप्त हुआ था। इनकी सहायता से मानक त्रुटि 1.85 गण्ना की गयी। अंत में सी.आर.मूल्य की गण्ना से 5.29 प्राप्त हुआ था। यह मान निर्धारित डी.एफ. (348) के सार्थकता स्थर .05 के 1.96 से अधिक है जिससे बनायी गयी शून्य परिकल्पना "प्राथमिक स्तर पर नर्सरी तथ सरस्वती शिशु मन्दिर अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के बीच सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि नर्सरी अध्यापक सरस्वती शिशु मन्दिर अध

यापकों की तुलना में उच्च शिक्षण शिक्षण अभिवृत्ति वाले होते हैं ओर अधिक विचलित भी होते हैं, कारण कि नर्सरी अध्यापक अनुभवी तथा प्रशिक्षण प्राप्त होते और अधिक अच्छी सेवा शर्तो के कारण उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले होते हैं। जबकि सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापक अप्रशिक्षित तथा अधिकांश बेराजगार होने के कारण खाली समय व्यतित करने के लिए लगे होतें है। इसलिए उनमें शिक्षण अभिवृत्ति कम पायी जाती है।

'kk/k fu"d"k&

- परिषदीय तथा नर्सरी विद्यालय के प्राथमिक स्तर के अध यापक शिक्षण अभिवृति मे सार्थक अन्तर रखते हैं। अतः परिषदीय विद्यालय के अध्यापक नर्सरी के तुलना में उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले होतें है।
- परिषदीय तथा सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालय के प्राथमिक स्तर के अध्यापक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर रखते है। अतः परिषदीय विद्यालयों के अध्यापक सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों की तुलना में उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले होते हैं।
- नर्सरी के अध्यापक सरस्वती शिशु मन्दिर अध्यापकों की तुलना में उच्च शिक्षण अभिवृत्ति वाले होते हैं क्योंकि दोनों अभिवृत्तियों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया था।

lanHk xUFk lwph

अहूलवालिया, एस.पी. (1987) : "मैनुअल फार टीचर इनवेंटरी नेशनल साइकोलाजिकल कारपोरेशन, आगरा।"

कपिल एच.के. (1992) : "सांख्यिकी के मूल तत्व" विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

गुप्ता एस.पी. (1990) : "भारतीय शिक्षा तथा उनकी समस्याएं" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

पाण्डेय के.पी. (1998) : "शैक्षिक अनुसंधान" विश्व विद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

सिंह एन.के (1993) : "ए साइको सोशल स्टडी ऑफ दी डीप्राइभ एण्ड दी नान डीप्राइब्ड एडोल्ससेन्टस" एजुकेशन फैकेल्टी बी.एच.यू., वाराणसी।

सरोजनी (1959) : "शिक्षक प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति" शोध प्रबन्ध शिक्षा संकाय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखरपुर, उ.प्र.।